HOME | LOGIN | E-PAPER | NEWSLETTER | FEEDBACK | ABOUT US | CONTACT US | SITEMAP | RATE CARD | RSS

Tuesday, March 01, 2011 12:11:08 PM

ताज़ा समाचार * बढ़ सकती है महंगाई: प्रणव * सुनवाई में शामिल होंगे सलमान बट * रिजवानुर मामला: सुप्रीम कोर्ट ने हाई कोर्ट का फ़ैसला दरकिनार किया * अफ़पाक के नये अमे

मुख्यपृष्ठ रांची जमशेदपुर धनबाद देवघर पटना सिलीगुड़ी

- Citizen Journalist
- Forum
- Railway Time Table
- Flight Details
- Jharkhand Politics

PK SPECIAL

लगातार 26 सालों से प्रभात खबर आम लोगों की बुलंद आवाज बना हुआ है. जन-जन के साथ एक अटूट रिश्ते से बंधे इस अखबार ने इस अवधि में समय-समय पर सफलता पूर्वक अपनी कई शाखाएं भी खोलीं है. इसी कड़ी में आज से प्रभात खबर का एक और सफल संस्करण भागलपुर से शुरू हुआ. इस नये संस्करण का हर पन्ना पूर्ण रूप से रंगीन है. इस तरह भागलपुर में प्रभात खबर को पहला संपूर्ण रंगीन अखबार होने का गौरव भी प्राप्त हुआ है.

Other Headline

CHIEF EDITOR

- फ़िर बिहार से नि...
  आजाद भारत की राजनीतिक जड़ता को तोड़ा बिहार आंदोलन ने
- अमरत्व की तलाश!
- लौटा दो हमें का...
- (4) सपने, संघर्...

आधी-अधूरी क्रांतियों का युग

योगेंद्र यादव | 2/14/2011 7:22:58 AM

Change font size: | Print E-mail Comments Rating SHARE Bookmark

क्रांति के आधुनिक विचार का जन्म 18वीं सदी में फ्रांस की राज्य क्रांति से हुआ. 19वीं सदी आते आते यह संयोग एक सपना बन गया. क्रांति सिर्फ़ तख्ता पलट की बजाय सामाजिक आर्थिक व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन का पर्याय बन गयी.

आंखें काहिरा के तहरीर चौक की फ़ोटो देख रही थीं. लेकिन कानों में इकबाल बानो की अद्भुत आवाज गूंज रही थी'हम देखेंगे..लाजिम है कि हम भी देखेंगे/वो दिन कि जिसका वादा है/जो लौह-ए-अजल में लिखा है.'एक क्षण के लिये मन अटका. क्या वाकई जिस दिन का वादा था वो दिन 'लौह-ए-अजल'में लिखा है? क्रांति इस दुनिया का शाश्वत नियम है? काहिरा कि 'बेला-चमेली'क्रांति (यासमीनी रिवोल्यूशन) ने यह सवाल पूछने पर मजबूर किया है.

बेशक काहिरा से इस्कंदरिया तक जनता-जनार्दन का उभार क्रांति के पुराने सपने को जगाता है. पाकिस्तान के क्रांतिकारी कवि फ़ैज अहमद फ़ैज की यह गजल पूरी दुनिया में तानाशाही के जुल्मो-सितम के खिलाफ़ लड़ने वालों के लिये प्रेरणा-गीत बन चुकी है.

शायद लोकतंत्र की कीमत भारत से ज्यादा पाकिस्तान, बांगलादेश और नेपाल के लोग समझते हैं, चूंकि उन्होंने तानाशाही झेली है. हुस्नी मुबारक के सत्ता छोड़कर भाग जाने पर काहिरा में किसी न किसी के होंठों पर तो फ़ैज के बोल आये होंगे 'जब जुल्म-ओ-सितम के कोह-ए-गरां/रुई की तरह उड़ जायेंगे.' मन फ़िर पहाड़ और रुई के इस रूपक पर अटकता है. कौन नहीं जानता कि मुबारक की तानाशाही के सर पर दुनिया को लोकतंत्र का पाठ पढ़ाने वाले अमेरीका और उसके यूरोपीय दुमछल्लों का वरदहस्त था.

तानाशाह के रुख्सत होने पर इजरायल की चिंता और फ़िलिस्तीनियों का उल्लास, मिस्र-इजरायल और अमेरीका के हुक्मरानों के नापाक रिश्तों का खुलासा करता है. अगर आप पिछले दस दिन से तेल के दाम का खेल देख रहे हों, तो आप समझ जायेंगे कि धरती के नीचे खनिज होना धरती पर रहने वाले मनुष्यों के लिये शाप हो सकता है.

पहले ट्यूनीशिया और फ़िर मिस्र में जो हुआ, उसे पहाड़ के रूई की तरह उड़ जाने की बजाय कठपुतली के धागे कटने की संज्ञा देना बेहतर होगा. अरब जगत में अमेरीका की नाक के बाल हुस्नी मुबारक अब उसकी आंख की किरकिरी बन गये थे. विचार श्रृंखला फ़िर

OTHER HEADLINE

- बजट ने उम्मीदों पर पानी फ़ेरा...
- लोकतंत्र का नया शास्त्र जरूरी...
- अमरत्व की तलाश!...
- यह एक संतुलित रेल बजट...
- क्या कलीमुद्दीन भी रिहा होगा...
- लड़खड़ाते यूपीए के लिए मौका...
- गद्दाफ़ी भारत क्यों आते?...
- मत घबराइये इस महंगाई से...
- प्रधानमंत्री को छवि की चिंता...
- भविष्य बताते हैं उपनिषद...
- उस जीत का जवाब नहीं...
- एक'लंगड़ी'सत्ता का राजधर्म...
- मुसलिम राजनीति की सीमाएं...
- मिस्र मामले में क्या करे भारत...
- वैश्विक संकट या समृद्धि?...
- अपनी छवि के शिकार सौरभ...
- मिस्र में इजरायली हित...
- लोकतंत्र का बायोडाटा...
- घोटालों पर छायी खामोशी...

टूटती है. गजल अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गयी है 'सब ताज उछाले जायेंगेसब तख्त गिराये जायेंगे.' यह रेकॉर्डिग लाहौर की है, जब पाकिस्तान जिया-उल-हक की तानाशाही तले पिस रहा था. गजल के इस मोड़ पर श्रोताओं की भावनाओं का विस्फ़ोट होता है.

इकबाल बानो की आवाज तालियों की गड़गड़ाहट और तानाशाही विरोधी नारों में डूब जाती है. एक क्षण के लिये भय का साम्राज्य ढह जाता है. ठीक वैसे, जैसे तहरीर चौक पर पर पहले दिन महज दो सौ बहादुर लोगों के खड़े होने से हुआ था. ताज उछलते और तख्त गिरते देखकर मन फ़िर फ़ैज के कलाम के साथ बह निकालता है 'जब अर्ज-ए-खुदा के काबे से सब बुत उठवाये जायेंगे/ हम अहल-ए-सफ़ा, मरदूद-ए-हरम/ मसनद पे बिठाये जायेंगे.

लेकिन तभी राजनीति की हकीकत कविता को विराम देती है. ट्यूनीशिया में तख्त तो पलटा, लेकिन मसनद पर बहिष्कृत समाज नहीं बैठा. पुराने सत्ताधीशों का एक और गुट फ़िर सिंहासन पर काबिज हो गया. मिस्र् में अंतत क्या होगा, यह नहीं कहा जा सकता. लेकिन फ़िलहाल तो मसनद पर वही बैठे हैं, जिनके हाथ में बंदूक है, जो कल भी बंदूक के मालिक थे.

मुबारक भले ही उठा दिये गये हों, सच के मंदिर से झूठ के पुतले उठने की कोई सूरत दिखायी नहीं देती. अगर क्रांति की चिंगारी जल्द ही बुझ न गयी, तो यह संभव है की सत्ता का हस्तांतरण फ़ौज के हाथों से चुनी हुई सरकार के पास आ जायेगा. लेकिन मिस्र् के शासक जिस अंतरराष्ट्रीय निजाम के हाथ में मोहरा हैं, वह नहीं बदलेगा. तेल, पूंजी और सत्ता का रिश्ता नहीं टूटेगा.

मेरे मन की भटकन से बेखबर इकबाल बानो आगे बढ़ती जा रही थीं'और राज करेगी खुल्क-ए-ख़ुदा/जो मैं भी हूं और तुम भी हो.' लेकिन अब फ़ैज के कलम से बुना यह सपना हकीकत को और भी मैला किये दे रहा था. दिमाग आगे की बजाय पीछे मुड़कर देख रहा था. क्रांति के आधुनिक विचार का जन्म 18वीं सदी में फ्रांस की राज्य क्रांति से हुआ. 19वीं सदी आते आते यह संयोग एक सपना बन गया.

क्रांति सिर्फ़ तख्ता पलट की बजाय सामाजिक आर्थिक व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन का पर्याय बन गयी. 20वीं सदी में इस सपने को हकीकत के धरातल पर उतारने की अनेक कोशिशें हुईं- रूस, चीन और ईरान की क्रांतियों की चर्चा किये बिना 20वीं सदी का इतिहास नहीं लिखा जा सकता.

इन क्रांतियों ने राज्यसत्ता और शासक वर्ग का चेहरा बदला, समाज और अर्थनीति में दूरगामी बदलाव किये. लेकिन बीसवीं सदी के ये प्रयोग उन्नीसवीं सदी के सपने से बहुत दूर ही रुक गये. क्रांतिया तो हुईं, लेकिन जिन लोगों और जिस विचार के नाम पर ये क्रांतियां हुई थीं, वो जल्द ही हाशिये पर चले गये.21वीं सदी आते आते क्रांति का संकल्प थक चुका था, यह हसीन सपना एक चालू मुहावरे में बदल चुका था.

हमारे यहां हरित क्रांति और श्वेत क्रांति की तर्ज पर दुनिया भर में नाना किस्म की क्रांतियों की बात चल निकली. एक बार फ़िर क्रांति शब्द का अर्थ सिमट कर तख्ता पलट हो गया. पूर्व सोवियत संघ के देशों में 'मखमली क्रांति'फ़िर यूक्रेन में 'नारंगी क्रांति'और अब मिस्र् में बेला-चमेली क्रांति. जैसे जैसे क्रांति के विचार पर रंग और रूप मढ़े जाने लगे, वैसे-वैसे क्रांति का विचार फ़ीका और गंधहीन होने लगा. इकबाल बानो की आवाज थमने के साथ एक प्रश्न उभरा कि क्या 21वीं सदी में क्रांति के विचार का पुनर्जन्म होगा? हम देखेंगे?
लेखक सामयिक वार्ता के संपादक हैं.

- कुएं एवं खाई के बीच श्रम सुधार...
- जो दरिया झूम के उट्ठेंगे...
- एक झूठ का धराशायी होना...
- अरब जगत में परिवर्तन की आहट...
- कैंसर के खात्मे की बड़ी चुनौतियां...
- धराशायी होती मुसलिम तानाशाही...
- मिस्र् की आग का दूरगामी असर...
- ट्यूनीशिया में इतिहास का अंत...
- चुनाव सुधार या लोकतांत्रिक बदलाव...

Contact Us | Advertisement | Archive | Todays News | Style Book | Corporate Mail

© Copyright of Prabhat khabar | Terms & Conditions of Reading | Privacy and Cookie Policy
Site best viewed in IE 6.0

Developed & Designed By 4C plus